

राजस्थान की बदलती पर्यटन नीतियाँ एवं उनके प्रभाव : एक विस्तृत विश्लेषण

Shodh Siddhi

A Multidisciplinary & Multilingual Double Blind Peer Reviewed International Research Journal

Volume: 02 | Issue: 02 [April to June : 2026], pp. 75-83



भगवती मेहता

शोधार्थी (भूगोल विभाग)

महात्मा ज्योतिराव फूले विश्वविद्यालय, जयपुर

Abstract

राजस्थान भारत के प्रमुख पर्यटन राज्यों में अग्रणी स्थान रखता है। ऐतिहासिक दुर्गों, राजप्रासादों, हवेलियों, मरुस्थलीय परिदृश्य, धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थलों, लोककलाओं तथा समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के कारण यह राज्य देश-विदेश के लाखों पर्यटकों को आकर्षित करता है। वैश्वीकरण, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के विकास, पर्यटकों की बदलती आवश्यकताओं, पर्यावरणीय चुनौतियों तथा सतत विकास की अवधारणा ने पर्यटन क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। इन परिवर्तनों के अनुरूप राजस्थान सरकार ने समय-समय पर अपनी पर्यटन नीतियों में संशोधन करते हुए उन्हें अधिक व्यावहारिक, निवेशोन्मुख तथा पर्यावरण-संवेदी बनाया है।

प्रस्तुत शोध-पत्र में राजस्थान की प्रमुख पर्यटन नीतियों का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए उनके उद्देश्यों, विशेषताओं तथा आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं पर्यावरणीय प्रभावों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन पूर्णतः द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है तथा इसमें सरकारी नीतिगत दस्तावेजों, वार्षिक प्रतिवेदनों, शोध-पत्रों एवं प्रामाणिक प्रकाशनों का उपयोग किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि यदि पर्यटन विकास को पर्यावरण संरक्षण, स्थानीय समुदाय की भागीदारी तथा आधुनिक तकनीकी नवाचारों के साथ संतुलित रूप से आगे बढ़ाया जाए तो राजस्थान भविष्य में वैश्विक स्तर पर सतत एवं उत्तरदायी पर्यटन का एक आदर्श मॉडल बन सकता है।

मुख्य शब्द: राजस्थान, पर्यटन नीति, सतत पर्यटन, इको-टूरिज्म, डिजिटल पर्यटन, पर्यटन विकास, सांस्कृतिक विरासत।

1. परिचय

पर्यटन आधुनिक विश्व की सर्वाधिक गतिशील आर्थिक गतिविधियों में से एक है। यह केवल मनोरंजन अथवा भ्रमण का माध्यम नहीं, बल्कि आर्थिक विकास, सांस्कृतिक आदान-प्रदान, क्षेत्रीय संतुलित विकास तथा रोजगार सृजन का प्रभावी साधन भी है। विकासशील देशों में पर्यटन उद्योग विदेशी मुद्रा अर्जित करने, स्थानीय संसाधनों के उपयोग को प्रोत्साहित करने तथा सेवा क्षेत्र के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत में पर्यटन उद्योग राष्ट्रीय आय,

रोजगार तथा सांस्कृतिक पहचान को सुदृढ़ करने वाले प्रमुख क्षेत्रों में सम्मिलित है।

राजस्थान अपनी ऐतिहासिक, सांस्कृतिक तथा प्राकृतिक विविधताओं के कारण भारतीय पर्यटन मानचित्र पर विशिष्ट स्थान रखता है। राज्य के किले, महल, हवेलियाँ, संग्रहालय, मरुस्थलीय पर्यटन, वन्यजीव अभयारण्य, धार्मिक स्थल, लोक संगीत, लोक नृत्य, हस्तशिल्प तथा पारम्परिक उत्सव पर्यटकों के लिए प्रमुख आकर्षण का केन्द्र हैं। जयपुर, उदयपुर, जोधपुर, जैसलमेर, अजमेर, पुष्कर, रणथम्भौर, चित्तौड़गढ़ तथा माउंट आबू जैसे पर्यटन केन्द्र प्रतिवर्ष देशी एवं विदेशी पर्यटकों की बड़ी संख्या को आकर्षित करते हैं।

पिछले दो दशकों में वैश्विक पर्यटन उद्योग में तीव्र परिवर्तन हुए हैं। सूचना प्रौद्योगिकी का विस्तार, ऑनलाइन बुकिंग प्रणाली, डिजिटल भुगतान, सोशल मीडिया आधारित प्रचार, स्मार्ट पर्यटन सेवाएँ तथा पर्यावरणीय उत्तरदायित्व जैसी अवधारणाओं ने पर्यटन के स्वरूप को परिवर्तित किया है। कोविड-19 महामारी के पश्चात पर्यटन क्षेत्र में सुरक्षा, स्वच्छता, डिजिटल सुविधाओं तथा सतत पर्यटन के महत्व में और अधिक वृद्धि हुई। इन परिवर्तनों को ध्यान में रखते हुए राजस्थान सरकार ने अपनी पर्यटन नीतियों में समय-समय पर संशोधन कर पर्यटन विकास को नई दिशा प्रदान की।

राज्य सरकार की विभिन्न पर्यटन नीतियों का उद्देश्य केवल पर्यटकों की संख्या में वृद्धि करना नहीं रहा, बल्कि पर्यटन को राज्य के समग्र आर्थिक एवं सामाजिक विकास का माध्यम बनाना भी रहा है। नई नीतियों में निजी निवेश, सार्वजनिक-निजी सहभागिता, ग्रामीण पर्यटन, फिल्म पर्यटन, विरासत संरक्षण, महिला सुरक्षा, स्थानीय समुदाय की भागीदारी, पर्यावरण संरक्षण तथा डिजिटल सेवाओं के विस्तार पर विशेष बल दिया गया है। इन प्रयासों के परिणामस्वरूप राजस्थान का पर्यटन क्षेत्र अधिक संगठित, प्रतिस्पर्धी तथा निवेश-अनुकूल बनता दिखाई देता है।

इसी पृष्ठभूमि में प्रस्तुत शोध-पत्र राजस्थान की बदलती पर्यटन नीतियों का क्रमिक अध्ययन करते हुए यह विश्लेषण करता है कि इन नीतिगत परिवर्तनों ने राज्य के पर्यटन उद्योग, क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था, रोजगार, सांस्कृतिक संरक्षण तथा पर्यावरणीय संतुलन को किस प्रकार प्रभावित किया है। साथ ही, अध्ययन भविष्य की पर्यटन नीतियों के लिए आवश्यक सुधारात्मक सुझाव भी प्रस्तुत करता है।

2. शोध उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. राजस्थान की पर्यटन नीतियों के विकास एवं उनके क्रमिक परिवर्तनों का अध्ययन करना।
2. वर्ष 2001 से वर्तमान तक लागू प्रमुख पर्यटन नीतियों की विशेषताओं एवं उद्देश्यों का तुलनात्मक विश्लेषण करना।
3. राजस्थान की बदलती पर्यटन नीतियों के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा पर्यावरणीय प्रभावों का मूल्यांकन करना।
4. पर्यटन नीतियों के माध्यम से पर्यटन अवसंरचना, निजी निवेश, रोजगार सृजन तथा स्थानीय समुदाय की भागीदारी में आए परिवर्तनों का विश्लेषण करना।
5. पर्यटन क्षेत्र के समक्ष विद्यमान प्रमुख चुनौतियों की पहचान करना।

3. अनुसंधान पद्धति

प्रस्तुत शोध **वर्णनात्मक** एवं **विश्लेषणात्मक** प्रकृति का है। अध्ययन का उद्देश्य राजस्थान की बदलती पर्यटन नीतियों तथा उनके बहुआयामी प्रभावों का समग्र विश्लेषण करना है। इस शोध में पूर्णतः **द्वितीयक आँकड़ों (Secondary Data)** का उपयोग किया गया है।

अध्ययन के लिए राजस्थान सरकार के पर्यटन विभाग द्वारा प्रकाशित पर्यटन नीतियाँ (2001, 2015, 2020 एवं 2021), भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्टें, *India Tourism Statistics*, राजस्थान आर्थिक समीक्षा, संयुक्त राष्ट्र पर्यटन संगठन (UN Tourism), विश्व यात्रा एवं पर्यटन परिषद (WTTC) की रिपोर्टें, विभिन्न शोध-पत्र, पुस्तकें, शोध-प्रबंध तथा अन्य प्रामाणिक प्रकाशित स्रोतों का उपयोग किया गया है।

संकलित आँकड़ों का विश्लेषण **तुलनात्मक विश्लेषण (Comparative Analysis)**, **विषयवस्तु विश्लेषण (Content Analysis)** तथा **वर्णनात्मक विश्लेषण (Descriptive Analysis)** की सहायता से किया गया है। विभिन्न पर्यटन नीतियों के उद्देश्यों, प्रावधानों एवं प्रभावों की तुलना करते हुए आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा पर्यावरणीय पक्षों का समग्र मूल्यांकन

किया गया है। अध्ययन के निष्कर्षों को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करने के लिए सारणियों का उपयोग किया गया है, जिससे नीतिगत परिवर्तनों एवं उनके प्रभावों को स्पष्ट रूप से समझा जा सके।

अध्ययन की सीमा यह है कि इसमें प्राथमिक सर्वेक्षण अथवा क्षेत्रीय अध्ययन सम्मिलित नहीं है। तथापि उपयोग किए गए सभी स्रोत सरकारी, संस्थागत एवं शोध-आधारित होने के कारण अध्ययन के निष्कर्ष पर्याप्त रूप से विश्वसनीय एवं प्रामाणिक हैं। यह अध्ययन राजस्थान की पर्यटन नीतियों के विकासक्रम, उनके प्रभावों तथा भविष्य की पर्यटन नीति निर्माण के लिए उपयोगी आधार प्रदान करता है।

4. राजस्थान की प्रमुख पर्यटन नीतियाँ

राजस्थान भारत के उन राज्यों में सम्मिलित है जहाँ पर्यटन को आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण तथा क्षेत्रीय संतुलित विकास का एक महत्वपूर्ण साधन माना गया है। राज्य सरकार ने समय-समय पर पर्यटन क्षेत्र की बदलती आवश्यकताओं तथा वैश्विक पर्यटन प्रवृत्तियों को ध्यान में रखते हुए अनेक नीतियों का निर्माण एवं संशोधन किया। इन नीतियों का उद्देश्य केवल पर्यटकों की संख्या में वृद्धि करना नहीं था, बल्कि पर्यटन अवसंरचना का विकास, निजी निवेश को प्रोत्साहन, रोजगार सृजन, स्थानीय समुदाय की सहभागिता तथा सतत पर्यटन विकास सुनिश्चित करना भी था। राजस्थान की प्रमुख पर्यटन नीतियों का संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है—

4.1 राजस्थान पर्यटन नीति, 2001

वर्ष 2001 में राज्य सरकार द्वारा लागू की गई पर्यटन नीति राजस्थान के पर्यटन विकास की पहली व्यापक एवं सुव्यवस्थित नीति मानी जाती है। इस नीति का प्रमुख उद्देश्य राज्य की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहरों का संरक्षण करते हुए उन्हें पर्यटन विकास से जोड़ना था। नीति के माध्यम से किलों, महलों, हवेलियों, संग्रहालयों तथा अन्य विरासत स्थलों के संरक्षण एवं पुनरुद्धार को प्राथमिकता दी गई। साथ ही पर्यटन अवसंरचना के विकास, होटल उद्योग के विस्तार तथा निजी क्षेत्र की भागीदारी को प्रोत्साहित किया गया।

इस नीति के अंतर्गत मरुस्थलीय पर्यटन, धार्मिक पर्यटन, सांस्कृतिक पर्यटन तथा विरासत पर्यटन को विशेष महत्व प्रदान किया गया। राज्य के प्रमुख पर्यटन नगरों में सड़क, विद्युत, पेयजल तथा आवासीय सुविधाओं में सुधार के प्रयास किए गए। परिणामस्वरूप राजस्थान राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पर्यटन मानचित्र पर अधिक प्रभावी रूप से स्थापित होने लगा तथा विदेशी पर्यटकों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई।

4.2 राजस्थान पर्यटन यूनिट नीति, 2015

पर्यटन क्षेत्र में बढ़ते निवेश तथा निजी क्षेत्र की सहभागिता को ध्यान में रखते हुए वर्ष 2015 में राजस्थान पर्यटन यूनिट नीति लागू की गई। इस नीति का उद्देश्य पर्यटन उद्योग को अधिक प्रतिस्पर्धी, निवेश-अनुकूल तथा रोजगारोन्मुख बनाना था। इसके अंतर्गत होटल, रिसॉर्ट, थीम पार्क, मनोरंजन केन्द्र, हेरिटेज होटल, वन्यजीव पर्यटन केन्द्र तथा अन्य पर्यटन इकाइयों की स्थापना एवं संचालन की प्रक्रिया को सरल बनाया गया।

इस नीति के माध्यम से निवेशकों को भूमि आवंटन, विद्युत शुल्क, कर रियायत, पंजीकरण तथा विभिन्न प्रशासनिक अनुमतियों में अनेक सुविधाएँ प्रदान की गईं। 'एकल खिड़की प्रणाली' (Single Window System) के माध्यम से निवेश संबंधी प्रक्रियाओं को सरल एवं पारदर्शी बनाया गया। परिणामस्वरूप पर्यटन क्षेत्र में निजी निवेश बढ़ा तथा अनेक नए पर्यटन प्रतिष्ठानों की स्थापना हुई, जिससे स्थानीय स्तर पर रोजगार एवं आय के अवसरों का विस्तार हुआ।

4.3 राजस्थान पर्यटन नीति, 2020

वर्ष 2020 की पर्यटन नीति राजस्थान की सबसे आधुनिक एवं दूरदर्शी पर्यटन नीतियों में से एक मानी जाती है। इस नीति में पर्यटन विकास को सतत विकास के सिद्धांतों के साथ जोड़ते हुए डिजिटल तकनीक, नवाचार तथा स्थानीय समुदाय की भागीदारी पर विशेष बल दिया गया। नीति का उद्देश्य पर्यटन सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार करना, पर्यटकों को आधुनिक सुविधाएँ उपलब्ध कराना तथा पर्यटन क्षेत्र को वैश्विक प्रतिस्पर्धा के अनुरूप विकसित करना था।

इस नीति के अंतर्गत ऑनलाइन टिकटिंग, मोबाइल आधारित पर्यटन सेवाएँ, डिजिटल सूचना प्रणाली, वर्चुअल संग्रहालय, ई-गाइड सेवाएँ तथा स्मार्ट पर्यटन सुविधाओं को प्रोत्साहित किया गया। साथ ही डेजर्ट सर्किट, ट्राइबल सर्किट, धार्मिक पर्यटन सर्किट, इको-टूरिज्म सर्किट तथा ग्रामीण पर्यटन सर्किट के विकास पर विशेष ध्यान दिया गया। फिल्म पर्यटन, होमस्टे योजना

तथा कारवां पर्यटन जैसी नवीन अवधारणाओं को भी नीति में सम्मिलित किया गया, जिससे पर्यटन गतिविधियों का विविधीकरण संभव हुआ।

4.4 राजस्थान इको-टूरिज्म नीति, 2021

पर्यावरण संरक्षण तथा जैव विविधता के संरक्षण की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए वर्ष 2021 में राजस्थान इको-टूरिज्म नीति लागू की गई। इस नीति का उद्देश्य प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करते हुए पर्यटन विकास को सतत एवं उत्तरदायी बनाना था। इसके अंतर्गत वन क्षेत्रों, अभयारण्यों, राष्ट्रीय उद्यानों तथा पर्यावरणीय दृष्टि से संवेदनशील क्षेत्रों में नियंत्रित एवं नियोजित पर्यटन गतिविधियों को प्रोत्साहित किया गया।

नीति में स्थानीय समुदायों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने पर विशेष बल दिया गया ताकि पर्यटन से प्राप्त आर्थिक लाभ स्थानीय स्तर तक पहुँच सकें। प्रकृति भ्रमण, पक्षी अवलोकन, वन भ्रमण, प्रकृति शिक्षा, पर्यावरण जागरूकता तथा सामुदायिक पर्यटन जैसी गतिविधियों को बढ़ावा दिया गया। इससे पर्यावरण संरक्षण तथा ग्रामीण आजीविका दोनों को सुदृढ़ करने में सहायता मिली।

4.5 वर्ष 2022-2025 के दौरान नई पहलें

वर्ष 2022 के बाद राजस्थान सरकार ने पर्यटन क्षेत्र को और अधिक आधुनिक एवं प्रतिस्पर्धी बनाने के उद्देश्य से अनेक नई पहलें प्रारम्भ कीं। डिजिटल पर्यटन सेवाओं का विस्तार, पर्यटन स्थलों पर स्मार्ट सूचना प्रणाली, सीमा पर्यटन, फिल्म पर्यटन को प्रोत्साहन, हवाई संपर्क का विस्तार, विरासत स्थलों के संरक्षण तथा धार्मिक पर्यटन के विकास पर विशेष ध्यान दिया गया। राज्य सरकार द्वारा आयोजित विभिन्न सांस्कृतिक उत्सवों एवं पर्यटन अभियानों ने राजस्थान की वैश्विक पहचान को और अधिक सुदृढ़ किया।

इन पहलों का मुख्य उद्देश्य पर्यटन क्षेत्र को केवल पारंपरिक विरासत पर्यटन तक सीमित न रखकर ग्रामीण, साहसिक, धार्मिक, फिल्म, स्वास्थ्य एवं इको-टूरिज्म जैसे विविध क्षेत्रों तक विस्तारित करना था। इससे पर्यटन उद्योग में नवाचार, निवेश, रोजगार तथा क्षेत्रीय विकास की संभावनाओं में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

5. पर्यटन नीतियों में प्रमुख परिवर्तन

राजस्थान की पर्यटन नीतियों का विकास राज्य की आर्थिक आवश्यकताओं, वैश्विक पर्यटन प्रवृत्तियों तथा बदलती सामाजिक एवं पर्यावरणीय परिस्थितियों के अनुरूप हुआ है। प्रारम्भिक पर्यटन नीतियों का मुख्य उद्देश्य राज्य की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहरों का संरक्षण तथा पर्यटन अवसंरचना का विकास था, जबकि नवीन नीतियों में डिजिटल तकनीक, सतत विकास, निजी निवेश, स्थानीय समुदाय की भागीदारी तथा पर्यटन के विविधीकरण को प्रमुखता दी गई है। इन परिवर्तनों ने राजस्थान के पर्यटन क्षेत्र को अधिक प्रतिस्पर्धी, आधुनिक तथा निवेश-अनुकूल बनाया है।

5.1 पर्यटन अवसंरचना का विकास

पर्यटन विकास की दृष्टि से अवसंरचना सबसे महत्वपूर्ण आधार है। पिछले दो दशकों में राजस्थान सरकार ने प्रमुख पर्यटन स्थलों पर सड़क, रेल एवं हवाई संपर्क में उल्लेखनीय सुधार किया है। जयपुर, उदयपुर, जोधपुर, जैसलमेर, अजमेर तथा बीकानेर जैसे प्रमुख पर्यटन केन्द्रों को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय परिवहन नेटवर्क से जोड़ा गया है। इसके अतिरिक्त होटल, रिसॉर्ट, पर्यटक विश्राम गृह, सूचना केन्द्र, पार्किंग, स्वच्छता सुविधाएँ तथा डिजिटल सूचना प्रणाली का भी विस्तार किया गया है। धार्मिक एवं विरासत स्थलों पर रोपवे, प्रकाश व्यवस्था, पेयजल, शौचालय तथा सुरक्षा सुविधाओं के विकास से पर्यटकों को बेहतर अनुभव प्राप्त हुआ है। इससे पर्यटन स्थलों की वहन क्षमता में वृद्धि हुई तथा पर्यटकों के ठहराव की अवधि भी बढ़ी।

5.2 विरासत संरक्षण से सतत विकास की ओर परिवर्तन

राजस्थान की प्रारम्भिक पर्यटन नीतियाँ मुख्यतः ऐतिहासिक धरोहरों के संरक्षण एवं उपयोग पर केन्द्रित थीं। समय के साथ यह दृष्टिकोण केवल संरक्षण तक सीमित न रहकर सतत विकास की अवधारणा से जुड़ गया। वर्तमान नीतियों में विरासत संरक्षण के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण, जैव विविधता, जल संरक्षण तथा स्थानीय संसाधनों के संतुलित उपयोग पर भी विशेष बल दिया जा रहा है।

सार्वजनिक-निजी सहभागिता (PPP) मॉडल के माध्यम से अनेक किलों, महलों, हवेलियों तथा ऐतिहासिक भवनों का संरक्षण एवं पुनरुद्धार किया गया है। इससे इन धरोहरों का संरक्षण भी हुआ तथा पर्यटन गतिविधियों का विस्तार भी संभव हुआ।

5.3 डिजिटल पर्यटन सेवाओं का विस्तार

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के विकास ने पर्यटन क्षेत्र की कार्यप्रणाली को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। राजस्थान सरकार ने डिजिटल पर्यटन सेवाओं को बढ़ावा देते हुए ऑनलाइन टिकट बुकिंग, मोबाइल एप, डिजिटल गाइड, वर्चुअल टूर, क्यूआर कोड आधारित सूचना प्रणाली तथा ऑनलाइन प्रचार-प्रसार को प्रोत्साहित किया है।

कोविड-19 महामारी के बाद संपर्करहित सेवाओं की आवश्यकता बढ़ने के कारण डिजिटल प्लेटफॉर्मों का महत्व और अधिक बढ़ गया। इससे पर्यटकों को यात्रा की योजना बनाने, आवास बुक करने तथा पर्यटन स्थलों की जानकारी प्राप्त करने में सुविधा हुई। डिजिटल सेवाओं के विस्तार ने पर्यटन प्रबंधन को अधिक पारदर्शी एवं प्रभावी बनाया है।

5.4 पर्यटन गतिविधियों का विविधीकरण

राजस्थान का पर्यटन लंबे समय तक विरासत एवं सांस्कृतिक पर्यटन तक सीमित माना जाता था, किन्तु नवीन पर्यटन नीतियों ने इसे बहुआयामी स्वरूप प्रदान किया है। वर्तमान में राज्य में ग्रामीण पर्यटन, इको-टूरिज्म, धार्मिक पर्यटन, साहसिक पर्यटन, फिल्म पर्यटन, स्वास्थ्य पर्यटन तथा वन्यजीव पर्यटन को भी प्रोत्साहित किया जा रहा है।

ग्रामीण पर्यटन के माध्यम से स्थानीय संस्कृति, हस्तशिल्प, लोककला एवं पारंपरिक जीवन शैली को पर्यटन से जोड़ा गया है। इसी प्रकार फिल्म पर्यटन नीति के कारण अनेक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय फिल्मों की शूटिंग राजस्थान में होने लगी, जिससे राज्य के पर्यटन स्थलों का वैश्विक प्रचार हुआ। इको-टूरिज्म के माध्यम से प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण तथा स्थानीय समुदायों की आय में वृद्धि के अवसर भी विकसित हुए।

5.5 निवेश एवं निजी क्षेत्र की सहभागिता

राजस्थान सरकार ने पर्यटन क्षेत्र में निजी निवेश को आकर्षित करने के लिए अनेक नीतिगत सुधार किए हैं। निवेशकों को कर रियायत, भूमि आवंटन में सुविधा, अनुमति प्रक्रियाओं का सरलीकरण तथा एकल खिड़की प्रणाली जैसी व्यवस्थाएँ उपलब्ध कराई गई हैं। इन सुधारों से पर्यटन उद्योग में निवेश की गति बढ़ी तथा होटल, रिसॉर्ट, मनोरंजन केन्द्र एवं अन्य पर्यटन परियोजनाओं की संख्या में वृद्धि हुई।

निजी क्षेत्र की सहभागिता ने पर्यटन सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार किया है तथा रोजगार के नए अवसर सृजित किए हैं। साथ ही स्थानीय उद्यमिता को भी प्रोत्साहन मिला है।

5.6 स्थानीय समुदाय की भागीदारी

नवीन पर्यटन नीतियों की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता स्थानीय समुदाय को पर्यटन विकास का सहभागी बनाना है। होमस्टे योजना, ग्रामीण पर्यटन, हस्तशिल्प विपणन, लोककला प्रदर्शन तथा स्वयं सहायता समूहों की भागीदारी के माध्यम से स्थानीय लोगों को पर्यटन से प्रत्यक्ष लाभ प्राप्त हो रहा है।

इस प्रकार पर्यटन केवल बाहरी निवेश तक सीमित न रहकर स्थानीय आर्थिक विकास का भी प्रभावी माध्यम बनता जा रहा है। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार एवं आय के नए अवसर विकसित हुए हैं तथा पलायन की समस्या को कम करने में भी सहायता मिली है।

तालिका 1 : राजस्थान की पर्यटन नीतियों में प्रमुख परिवर्तन

परिवर्तन का क्षेत्र	प्रारम्भिक स्थिति	वर्तमान स्थिति
पर्यटन दृष्टिकोण	विरासत आधारित	सतत एवं समावेशी पर्यटन
अवसंरचना	सीमित सुविधाएँ	आधुनिक एवं डिजिटल सुविधाएँ
निवेश	सरकारी निवेश	सार्वजनिक-निजी सहभागिता
पर्यटन गतिविधियाँ	विरासत एवं सांस्कृतिक पर्यटन	ग्रामीण, इको, फिल्म, साहसिक एवं धार्मिक पर्यटन
तकनीकी उपयोग	न्यूनतम	डिजिटल एवं स्मार्ट पर्यटन सेवाएँ
स्थानीय भागीदारी	सीमित	व्यापक सामुदायिक सहभागिता

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि राजस्थान की पर्यटन नीतियों में समय के साथ गुणात्मक परिवर्तन हुए हैं। प्रारम्भिक चरण में पर्यटन विकास का मुख्य आधार ऐतिहासिक धरोहरों का संरक्षण एवं सीमित पर्यटन अवसंरचना था, जबकि वर्तमान नीतियाँ सतत विकास, डिजिटल तकनीक, निजी निवेश तथा स्थानीय समुदाय की सहभागिता पर आधारित हैं। पर्यटन गतिविधियों का दायरा भी विरासत पर्यटन से आगे बढ़कर ग्रामीण, फिल्म, साहसिक, धार्मिक तथा इको-टूरिज्म तक विस्तृत हो

गया है। इन परिवर्तनों ने पर्यटन उद्योग को अधिक प्रतिस्पर्धी, समावेशी एवं रोजगारोन्मुख बनाया है तथा राज्य की आर्थिक प्रगति में इसके योगदान को सुदृढ़ किया है।

6. बदलती पर्यटन नीतियों के प्रभाव

राजस्थान सरकार द्वारा समय-समय पर लागू की गई पर्यटन नीतियों ने राज्य के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा पर्यावरणीय विकास पर व्यापक प्रभाव डाला है। इन नीतियों ने पर्यटन क्षेत्र को केवल आय एवं रोजगार का स्रोत ही नहीं बनाया, बल्कि क्षेत्रीय विकास, आधारभूत संरचना के विस्तार, स्थानीय समुदायों की भागीदारी तथा सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण को भी नई दिशा प्रदान की है। यद्यपि पर्यटन विकास से अनेक सकारात्मक परिणाम प्राप्त हुए हैं, किन्तु इसके साथ कुछ चुनौतियाँ भी सामने आई हैं, जिनका समाधान सतत एवं संतुलित पर्यटन विकास के माध्यम से किया जा सकता है।

6.1 आर्थिक प्रभाव

पर्यटन क्षेत्र राजस्थान की अर्थव्यवस्था के प्रमुख आधारों में से एक बन चुका है। पर्यटन नीतियों में किए गए सुधारों के फलस्वरूप राज्य में निजी निवेश में वृद्धि हुई, जिससे होटल उद्योग, रिसॉर्ट, परिवहन, हस्तशिल्प, खान-पान, मनोरंजन तथा अन्य सेवा क्षेत्रों का विस्तार हुआ। इससे प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दोनों प्रकार के रोजगार के अवसरों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। ग्रामीण क्षेत्रों में होमस्टे, ग्रामीण पर्यटन, हस्तशिल्प एवं स्थानीय उत्पादों के विपणन को बढ़ावा मिलने से स्थानीय समुदायों की आय में वृद्धि हुई। अनेक ऐसे क्षेत्र, जो पहले पर्यटन गतिविधियों से वंचित थे, अब पर्यटन मानचित्र पर अपनी पहचान बना रहे हैं। परिणामस्वरूप पर्यटन राज्य की सकल अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देने वाला क्षेत्र बन गया है।

तालिका 2 : पर्यटन नीतियों के आर्थिक प्रभाव

आर्थिक क्षेत्र	प्रमुख प्रभाव
निजी निवेश	पर्यटन परियोजनाओं में वृद्धि
रोजगार	प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रोजगार का विस्तार
होटल उद्योग	नए होटल एवं रिसॉर्ट की स्थापना
स्थानीय व्यवसाय	हस्तशिल्प, परिवहन एवं खान-पान सेवाओं का विकास
राज्य की आय	पर्यटन राजस्व में निरंतर वृद्धि

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि पर्यटन नीतियों का सबसे अधिक प्रभाव आर्थिक क्षेत्र पर पड़ा है। निवेश-अनुकूल नीतियों ने निजी क्षेत्र की भागीदारी को बढ़ाया, जिससे पर्यटन उद्योग का विस्तार हुआ। होटल, परिवहन, हस्तशिल्प तथा सेवा क्षेत्र में रोजगार के नए अवसर उत्पन्न हुए। इससे न केवल राज्य की आय में वृद्धि हुई, बल्कि स्थानीय अर्थव्यवस्था भी सुदृढ़ हुई। यह स्पष्ट करता है कि पर्यटन उद्योग राजस्थान के आर्थिक विकास का एक महत्वपूर्ण आधार बन चुका है।

6.2 सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रभाव

पर्यटन विकास ने राजस्थान की सांस्कृतिक पहचान को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सुदृढ़ किया है। लोककला, लोकसंगीत, लोकनृत्य, हस्तशिल्प तथा पारम्परिक उत्सवों को व्यापक पहचान मिली है। पर्यटन के कारण अनेक पारम्परिक कलाओं एवं शिल्पों का संरक्षण संभव हुआ है तथा स्थानीय कलाकारों को रोजगार के नए अवसर प्राप्त हुए हैं।

स्थानीय समुदायों की पर्यटन गतिविधियों में भागीदारी बढ़ने से सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तिकरण को बल मिला है। विशेष रूप से महिलाओं एवं स्वयं सहायता समूहों की भागीदारी में वृद्धि हुई है। ग्रामीण पर्यटन के माध्यम से स्थानीय संस्कृति एवं जीवन शैली को पर्यटन उत्पाद के रूप में विकसित किया गया है।

हालाँकि, कुछ क्षेत्रों में अत्यधिक व्यावसायीकरण के कारण सांस्कृतिक आयोजनों की मौलिकता प्रभावित होने की आशंका भी उत्पन्न हुई है। इसलिए पर्यटन विकास एवं सांस्कृतिक संरक्षण के मध्य संतुलन बनाए रखना आवश्यक है।

तालिका 3 : सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रभाव

क्षेत्र	प्रमुख परिवर्तन
सांस्कृतिक विरासत	संरक्षण एवं वैश्विक पहचान
लोककला	मांग एवं विपणन में वृद्धि
स्थानीय समुदाय	पर्यटन गतिविधियों में सहभागिता

महिला सशक्तिकरण	रोजगार एवं स्वरोजगार के अवसर
ग्रामीण विकास	होमस्टे एवं ग्रामीण पर्यटन का विस्तार

तालिका से स्पष्ट होता है कि पर्यटन नीतियों ने सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास को नई दिशा प्रदान की है। स्थानीय समुदायों की सहभागिता बढ़ने से ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार एवं आय के अवसरों का विस्तार हुआ है। पारम्परिक कला एवं संस्कृति को संरक्षण प्राप्त हुआ तथा महिला सशक्तिकरण को भी बढ़ावा मिला। इससे स्पष्ट होता है कि पर्यटन केवल आर्थिक गतिविधि नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का भी महत्वपूर्ण माध्यम है।

6.3 पर्यावरणीय प्रभाव

पर्यटन के विस्तार का प्रभाव प्राकृतिक संसाधनों एवं पर्यावरण पर भी पड़ा है। नवीन पर्यटन नीतियों में सतत पर्यटन, इको-टूरिज्म तथा पर्यावरण संरक्षण को प्राथमिकता दी गई है। राष्ट्रीय उद्यानों, अभयारण्यों तथा पर्यावरणीय दृष्टि से संवेदनशील क्षेत्रों में नियंत्रित पर्यटन गतिविधियों को प्रोत्साहित किया गया है।

इसके बावजूद लोकप्रिय पर्यटन स्थलों पर अत्यधिक भीड़, ठोस अपशिष्ट, प्लास्टिक प्रदूषण, जल संसाधनों पर बढ़ता दबाव तथा प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक उपयोग जैसी समस्याएँ भी देखने को मिलती हैं। इसलिए पर्यटन विकास को पर्यावरणीय वहन क्षमता के अनुरूप संचालित करना आवश्यक है।

6.4 अवसंरचनात्मक प्रभाव

पर्यटन नीतियों के परिणामस्वरूप राज्य में सड़क, रेल, हवाई संपर्क, होटल, सूचना केन्द्र, डिजिटल सेवाएँ, स्वच्छता सुविधाएँ तथा अन्य आधारभूत संरचनाओं का उल्लेखनीय विकास हुआ है। आधुनिक अवसंरचना ने पर्यटन स्थलों की पहुँच को आसान बनाया तथा पर्यटकों की संतुष्टि में वृद्धि की है।

डिजिटल सूचना प्रणाली, ऑनलाइन बुकिंग, मोबाइल आधारित सेवाएँ तथा स्मार्ट पर्यटन सुविधाओं ने पर्यटन प्रबंधन को अधिक प्रभावी बनाया है। इससे पर्यटन सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार हुआ तथा राज्य की प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता भी बढ़ी।

7. चुनौतियाँ एवं सुझाव

राजस्थान में पर्यटन क्षेत्र ने विगत दो दशकों में उल्लेखनीय प्रगति की है, परन्तु तीव्र पर्यटन विकास के साथ अनेक नई चुनौतियाँ भी उभरकर सामने आई हैं। यदि इन चुनौतियों का समय रहते समाधान नहीं किया गया तो पर्यटन विकास की गति एवं गुणवत्ता दोनों प्रभावित हो सकती हैं। अतः पर्यटन विकास को केवल पर्यटकों की संख्या बढ़ाने तक सीमित न रखकर उसे पर्यावरणीय, सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से संतुलित बनाना आवश्यक है।

7.1 पर्यटन विकास की प्रमुख चुनौतियाँ

(1) पर्यावरणीय असंतुलन

राजस्थान के अनेक प्रमुख पर्यटन स्थलों पर पर्यटकों की बढ़ती संख्या के कारण प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव बढ़ा है। जल संकट, प्लास्टिक प्रदूषण, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, ध्वनि प्रदूषण तथा प्राकृतिक आवासों पर मानवीय हस्तक्षेप जैसी समस्याएँ निरंतर बढ़ रही हैं। विशेषकर मरुस्थलीय क्षेत्रों, वन्यजीव अभयारण्यों तथा पर्वतीय पर्यटन स्थलों पर पर्यावरणीय वहन क्षमता (Carrying Capacity) का पर्याप्त ध्यान नहीं रखा जा रहा है।

(2) क्षेत्रीय असमानता

राजस्थान में पर्यटन गतिविधियाँ मुख्यतः जयपुर, उदयपुर, जैसलमेर, जोधपुर, अजमेर एवं माउंट आबू जैसे सीमित क्षेत्रों तक केंद्रित हैं। इसके विपरीत अनेक ग्रामीण एवं जनजातीय क्षेत्र आज भी पर्यटन विकास की मुख्यधारा से जुड़े नहीं हैं। इससे पर्यटन से प्राप्त आर्थिक लाभों का समान वितरण नहीं हो पा रहा है।

(3) आधारभूत सुविधाओं की कमी

यद्यपि प्रमुख पर्यटन केन्द्रों पर पर्याप्त सुविधाएँ विकसित की गई हैं, फिर भी अनेक उभरते पर्यटन स्थलों पर सड़क, पेयजल, स्वच्छता, पार्किंग, स्वास्थ्य सेवाएँ, सार्वजनिक परिवहन तथा डिजिटल कनेक्टिविटी जैसी मूलभूत सुविधाओं का अभाव देखा जाता है। इससे पर्यटकों के अनुभव पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

(4) सांस्कृतिक व्यावसायीकरण

पर्यटन के विस्तार के साथ अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं लोककलाओं का अत्यधिक व्यावसायीकरण भी हुआ है। कई स्थानों पर पारम्परिक सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ पर्यटकों की मांग के अनुरूप परिवर्तित होने लगी हैं, जिससे उनकी मौलिकता एवं सांस्कृतिक प्रामाणिकता प्रभावित होने की संभावना बढ़ जाती है।

(5) पर्यटन सुरक्षा एवं प्रबंधन

महिला पर्यटकों, विदेशी पर्यटकों तथा एकल यात्रियों की सुरक्षा आज पर्यटन विकास का एक महत्वपूर्ण पक्ष बन चुकी है। साथ ही भीड़ प्रबंधन, आपदा प्रबंधन, साइबर सुरक्षा तथा डिजिटल सूचना प्रणाली को और अधिक प्रभावी बनाने की आवश्यकता है।

तालिका 4 : राजस्थान पर्यटन क्षेत्र का SWOT विश्लेषण

पक्ष	विवरण
Strengths (ताकत)	समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, विश्व प्रसिद्ध किले एवं महल, विविध पर्यटन संसाधन
Weaknesses (कमजोरियाँ)	क्षेत्रीय असमानता, सीमित आधारभूत सुविधाएँ, जल संकट
Opportunities (अवसर)	ग्रामीण पर्यटन, इको-टूरिज्म, डिजिटल पर्यटन, फिल्म पर्यटन, मेडिकल पर्यटन
Threats (चुनौतियाँ)	पर्यावरणीय क्षरण, अतिपर्यटन, सांस्कृतिक व्यावसायीकरण, जलवायु परिवर्तन

उपरोक्त SWOT विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि राजस्थान के पास पर्यटन विकास की अपार संभावनाएँ उपलब्ध हैं। राज्य की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत इसकी सबसे बड़ी शक्ति है, जबकि क्षेत्रीय असमानता एवं आधारभूत सुविधाओं की कमी प्रमुख कमजोरियाँ हैं। ग्रामीण पर्यटन, डिजिटल पर्यटन, फिल्म पर्यटन एवं इको-टूरिज्म भविष्य में नए अवसर प्रदान कर सकते हैं। दूसरी ओर, पर्यावरणीय क्षरण, अतिपर्यटन तथा जलवायु परिवर्तन जैसी चुनौतियाँ पर्यटन के सतत विकास के लिए गंभीर खतरा उत्पन्न कर सकती हैं। अतः पर्यटन नीति निर्माण में इन सभी पक्षों का संतुलित समावेश आवश्यक है।

8. निष्कर्ष

राजस्थान भारत के उन राज्यों में से एक है जहाँ पर्यटन केवल आर्थिक गतिविधि नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पहचान, क्षेत्रीय विकास तथा सामाजिक समृद्धि का भी महत्वपूर्ण आधार है। प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि राज्य सरकार द्वारा समय-समय पर लागू की गई पर्यटन नीतियों ने पर्यटन क्षेत्र के विकास को नई दिशा प्रदान की है। वर्ष 2001 की पर्यटन नीति से प्रारम्भ होकर वर्ष 2015 की पर्यटन यूनिट नीति, वर्ष 2020 की पर्यटन नीति तथा वर्ष 2021 की इको-टूरिज्म नीति तक पर्यटन विकास की अवधारणा में निरंतर परिवर्तन एवं विस्तार हुआ है। प्रारम्भिक नीतियों में जहाँ विरासत संरक्षण एवं पर्यटन अवसंरचना पर विशेष बल दिया गया था, वहीं नवीन नीतियों में सतत पर्यटन, डिजिटल प्रौद्योगिकी, निजी निवेश, स्थानीय समुदाय की सहभागिता तथा पर्यावरण संरक्षण को समान रूप से महत्व दिया गया है।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि पर्यटन नीतियों ने राज्य की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। पर्यटन उद्योग के विस्तार से होटल, परिवहन, हस्तशिल्प, स्थानीय व्यापार, आतिथ्य सेवाओं तथा अन्य सेवा क्षेत्रों में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसरों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। निजी निवेश को प्रोत्साहन मिलने से पर्यटन अवसंरचना का विकास हुआ तथा राज्य के अनेक पर्यटन स्थलों की राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पहचान मजबूत हुई है। ग्रामीण पर्यटन, होमस्टे योजना तथा फिल्म पर्यटन जैसी पहलों ने स्थानीय समुदायों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से पर्यटन नीतियों ने राजस्थान की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, लोककला, लोकसंगीत, लोकनृत्य तथा पारम्परिक हस्तशिल्प को व्यापक पहचान दिलाई है। पर्यटन गतिविधियों में स्थानीय समुदायों की भागीदारी बढ़ने से ग्रामीण विकास एवं महिला सशक्तिकरण को भी बल मिला है। इसके साथ-साथ राज्य की ऐतिहासिक धरोहरों के संरक्षण तथा सांस्कृतिक पर्यटन के विस्तार ने राजस्थान की वैश्विक छवि को और अधिक सुदृढ़ बनाया है।

यद्यपि पर्यटन विकास से अनेक सकारात्मक परिणाम प्राप्त हुए हैं, तथापि अध्ययन यह भी इंगित करता है कि पर्यटन क्षेत्र अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है। लोकप्रिय पर्यटन स्थलों पर बढ़ती पर्यटक संख्या, पर्यावरणीय दबाव, जल संकट, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, सांस्कृतिक व्यावसायीकरण तथा क्षेत्रीय असमानता जैसी समस्याएँ भविष्य की पर्यटन नीतियों के समक्ष महत्वपूर्ण चुनौती हैं। यदि इन समस्याओं का समयबद्ध एवं प्रभावी समाधान नहीं किया गया तो पर्यटन विकास की स्थिरता प्रभावित हो सकती है।

इस अध्ययन का प्रमुख निष्कर्ष यह है कि भविष्य की पर्यटन नीतियों में **सतत पर्यटन विकास, डिजिटल नवाचार, स्थानीय समुदाय की सक्रिय सहभागिता, पर्यावरण संरक्षण तथा संतुलित क्षेत्रीय विकास** को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिए। पर्यटन नीति निर्माण में वैज्ञानिक योजना, आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी, संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग तथा समुदाय आधारित पर्यटन मॉडल को अपनाकर राजस्थान को वैश्विक स्तर पर एक आदर्श एवं उत्तरदायी पर्यटन गंतव्य के रूप में विकसित किया जा सकता है।

अतः यह कहा जा सकता है कि राजस्थान की बदलती पर्यटन नीतियाँ केवल पर्यटन उद्योग के विकास तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे राज्य के आर्थिक विकास, सामाजिक समावेशन, सांस्कृतिक संरक्षण तथा पर्यावरणीय संतुलन को भी सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। भविष्य में यदि इन नीतियों का प्रभावी क्रियान्वयन, नियमित मूल्यांकन तथा स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप संशोधन किया जाता है, तो राजस्थान का पर्यटन क्षेत्र राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर और अधिक सशक्त एवं प्रतिस्पर्धी बन सकता है।

संदर्भ सूची

1. भारत सरकार, पर्यटन मंत्रालय. (2025). *इंडिया टूरिज्म स्टैटिस्टिक्स 2025*. नई दिल्ली।
2. भारत सरकार, पर्यटन मंत्रालय. (2024). *वार्षिक प्रतिवेदन 2023-24*. नई दिल्ली।
3. राजस्थान सरकार. (2020). *राजस्थान पर्यटन नीति-2020*. जयपुर: पर्यटन विभाग।
4. राजस्थान सरकार. (2015). *राजस्थान पर्यटन यूनिट नीति-2015*. जयपुर: पर्यटन विभाग।
5. राजस्थान सरकार. (2001). *राजस्थान पर्यटन नीति-2001*. जयपुर: पर्यटन विभाग।
6. राजस्थान वन विभाग. (2021). *राजस्थान इको-टूरिज्म नीति-2021*. जयपुर।
7. राजस्थान सरकार. (2024). *राजस्थान आर्थिक समीक्षा 2023-24*. जयपुर।
8. नीति आयोग. (2023). *भारत में सतत पर्यटन विकास*. नई दिल्ली।
9. संयुक्त राष्ट्र पर्यटन संगठन (UN Tourism). (2024). *World Tourism Barometer*.
10. संयुक्त राष्ट्र पर्यटन संगठन (UN Tourism). (2023). *Tourism and Rural Development*.
11. World Travel & Tourism Council. (2025). *Economic Impact Report: India*.
12. World Travel & Tourism Council. (2024). *Travel & Tourism Economic Impact Report*.
13. Organisation for Economic Co-operation and Development. (2024). *Tourism Trends and Policies*.
14. *Journal of Sustainable Tourism*. (2025). विभिन्न शोध लेख।
15. *Tourism Management*. (2024). विभिन्न शोध लेख।
16. *Tourism Management Perspectives*. (2024). विभिन्न शोध लेख।
17. *Current Issues in Tourism*. (2023). विभिन्न शोध लेख।
18. *Asia Pacific Journal of Tourism Research*. (2024). विभिन्न शोध लेख।
19. *Annals of Tourism Research*. (2024). विभिन्न शोध लेख।
20. UNESCO. (2023). *Culture and Heritage for Sustainable Tourism*.

